बॉम्बे 27/2/1966 रविवार प्रातः क्लास

मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति गुडमॉर्निंग। तो बच्चे सतयुग में गुडमॉर्निंग, गुड डे, गुड इवनिंग, गुडनाइट– सब गुड ही गुड होते हैं। यहाँ न है कोई गुडमॉर्निंग, न है गुड इवनिंग और सबसे बुरी है गुडनाइट। नाइट है सबसे बुरी। तो सबसे अच्छा क्या है? भई सवेरे। सवेरे का(को) अमृत का मुहूर्त कहा जाता है। तुम बच्चे अभी हर समय गुड–सुबह–शाम। शाम सो भी कितना? आधाकल्प। अभी तुम बच्चे जान गए कि इस समय में हम योग–योगेश्वर और योग–योगेश्वरियाँ हो(हैं)। यहाँ एक योगेश्वर भी गाया जाता है ना। तो तुम एक–2 भारतवासी को, ईश्वर जो तुम्हारा बाप है, वो योग सिखलाते हैं। इसको कहा जाता है योग–योगेश्वरी। ईश्वर योग सिखलाते हैं माताओं को और सब बच्चों को। तो योग–योगेश्वरी के बाद तुम ज्ञान–ज्ञानेश्वरी हो; क्योंकि पहले बाप का पता पड़ा, योग लगा। फिर बाप कर करके ज्ञान सुनाते हैं सारे सृश्टि का चक्कर। फिर तुम बनते हो ज्ञान–ज्ञानेश्वरी, वो ज्ञान–ज्ञानेश्वर । वो योग–योगेश्वरी, वो योग–योगेश्वर। वो ज्ञान–ज्ञानेश्वरी, वो ज्ञान–ज्ञानेश्वर अर्थात् ईश्वर माताओं को भी और बच्चों को भी ज्ञान और योग सिखलाते हैं। कौन सिखलाते हैं? ईश्वर। कौन–सा ईश्वर? निराकार ईश्वर सिखलाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो, फिर बुद्धि से काम लो। बरोबर हमको ज्ञान वा योग। किसके साथ योग लगाओ? कभी कहेंगे गुरु के साथ योग लगाओ। यहाँ गुरू का लॉकेट पहन लेते हैं। कोई कहेंगे कृष्ण का योग लगाओ (तो) कृष्ण का लगा देंगे। बुद्ध से योग लगाओ (तो) बुद्ध लगा देंगे। साईंबाबा से योग लगाओ तो भले मुसलमान हो या कोई भी हो, फोटो डालकर ...। अनेक प्रकार के, कोई मेहर बाबा, कोई साईं बाबा, कोई मुसलमान, कोई हिन्दू, कोई पारसी, बाबा ही बाबा, बाबा ही बाबा....। फिर उनको कह देते हैं, ये कौन हैं? ये ईश्वर, भगवान हैं। सब भगवान ही भगवान हो गए हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो भगवान मनुष्य होता नहीं है। इनको भगवान नहीं कहा जाता है। भगवान–भगवती नहीं कह सकते हो। देखो, बाबा समझाते हैं, भगवान तो निराकार है और तुम सभी आत्माओं का बाप है। उसको कहा जाता है शिवबाबा। अक्षर ही एक है एकदम। अभी तुम कहाँ वो सतसंग किए हैं जन्म–जन्मांतर। तुम देखो वहाँ सतसंग होते होंगे...कोई सन्यासी बैठा होगा, कोई पण्डित बैठा होगा गद्दी पर और वो जानते हैं कि हमारा ये गुरू है, चिन्मयानंद है, शिवानंद है, अखनानंद है, फलाना नंद है, वो हमको कथा सुना रहे हैं। काहे की? ये रामायण की, वेदों की, शास्त्रों की, फलानों की। सुनते आए हो ना। अभी ऐसे तो नहीं कि इस जन्म में सुनी हैं। ना, जन्म–जन्मांतर सुनी आई हो। कब से फिर, ये मालूम होना चाहिए; क्योंकि कथाएँ सभी तो नहीं सुन सकते हो ना। सतयुग में तुम रामायण की कथा सुनेंगी? कथा कैसे सुनेंगे वहाँ! ये तो भक्तिमार्ग हो गया। वहाँ कुछ भी कथा–वथा होती नहीं है। तो बाप बैठ करके बच्चों को अच्छी तरह से समझाते हैं कि तुम बच्चों को अभी ईश्वर माना बाबा...। ईश्वर भी अक्षर थोड़ा ... है, जिसमें रसना नहीं आती है। बाबा से, मम्मा से ... हम बच्चे हैं ...। बरोबर अभी तुम जानते हो कि हम मम्मा और बाबा के बच्चे बने हैं, जिससे हमको स्वर्ग का सुख मिलने का है। यहाँ आते ही हो जान करके। ऐसे तो कोई सतसंगों में नहीं है। वहाँ कभी भी कोई भी जाते हैं तो हम नर्कवासी हैं, हम फिर स्वर्गवासी बनने जाते हैं। मैं अभी मनुष्य हूँ और देवता बनने जाता हूँ। ऐसा कोई सतसंग है? ...भारत में ऐसा कोई हो ही नहीं सकता है। तभी वो क्या है ? सतसंग है वा लतसंग है? एक होता है सतसंग, उनको फिर कहा जाता है लतसंग; क्योंकि वो सतसंग जो है, सत का तो संग है नहीं, बाकी है असत् का संग। ...सत् क्या चीज़ है? आत्मा सत् है। ये असत् है। अभी समझा ना! अभी तुम्हारा संग है सत् के साथ और ये असत् है। ये सभी जिनका संग है वो है असत् शरीर के साथ। अभी थोड़ा फर्क समझा! वो कहा जाता है– सतसंग तारे। तो फिर बाकी क्या है? पीछे है जिस्मानी संग बोरे। तभी बाबा कहते हैं तुम बच्चों को– हे बच्चों, अभी आत्म–अभिमानी बनो, देही–अभिमानी बनो। मैं तुम बच्चों को, आत्माओं को सिखलाता हूँ। इसको कोई भी नहीं जानते हैं, तभी बाप समझाते हैं ये है रूहानी नॉलेज

रूहों प्रति। रूह आकर ज्ञान देते हैं। बाबा, वो क्या है? ये सब भक्तिमार्ग है, ज्ञानमार्ग नहीं है। बाप आकर कहते हैं कि मैं हूँ सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों वगैरह–2, ये सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानने वाली अथॉरिटी। वो लोग हैं भक्तिमार्ग की अथॉरिटी। वेद–अध्ययन,यज्ञ,तप,दान,पुण्य वगैरह वो उनकी अथॉरिटी है। शास्त्र बहुत पढ़ते हो...। वो तो सभी शास्त्रों की अथॉरिटी है। बाबा फिर कहते हैं कि नहीं, मैं अथॉरिटी हूँ। गाया जाता है ना– वर्ल्ड ऑलमाइटी–सर्वशक्तिवान अथॉरिटी। काहे की अथॉरिटी? अरे, इसमें कोई मनुष्य थोड़े ही बैठे हैं जो समझते हैं अथॉरिटी काहे की! ...जो भी शास्त्र के कहते हैं हम अथॉरिटी है सभी वेदों–ग्रंथों (की)। बाबा कहते हैं– नहीं, अथॉरिटी सच्ची–2 मैं हूँ। तुमको सभी सच आ करके समझाता हूँ। ये जो कुछ भी पढ़ते हो–लिखते हो.. वो सब झूठ की अ थॉरिटी है। मैं तुमको सब सच बताता हूँ; क्योंकि तुम कहते ही हो सत्। तो अभी तुम हो... सत् का संग तारे, फिर झूठ का संग बोरे। गीता भी तो डूबी हुई है ना। ये भारत का बेड़ा डूबा हुआ है। अभी बाबा आते हैं इस भारत के बेड़े को तुम बच्चों द्वारा सेलवेज करने। तुम हो रूहानी सेलवेशन आर्मी। वो जिस्मानी सेलवेशन आर्मी होते हैं ना। तो सेलवेज का अर्थ क्या है? बेड़ा/स्टीमर डूबता है तो उनको सेलवेज करते हैं। बाप कहते हैं ये भारत का बेड़ा अभी डूबा हुआ है; क्योंकि पतित हो गया है ना। वो कभी–2 कहते हैं ना– भारत जो था, तो अभी समुद्र के नीचे है, द्वारका के नीचे है, लंका में वो सोने की दुनिया चली गई है। तो अभी भी भारत डूबा हुआ है। अभी भारत कोई डूबा हुआ है नहीं, कोई सागर के नीचे नहीं गया है। ना ; क्योंकि तुम बच्चों को समझाया कि तुमको तमोप्रधान बनना ही है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना .... तो सतोप्रधान रहते हो, बेड़ा ऊपर में है सतयुग और त्रेता। ये बड़ा स्टीमर है। तुम अभी स्टीमर पर बैठे हो। देखो, खिवैया भी कहते हैं ना। बाबा हमारी जो बोट है, वो सिंधी में कहते हैं ना– बेड़ी नूँ पार लगाय निगड़ो निमाड़ो पापी या यहाँ पापी आया किव कमाया। सिंधी में अक्षर हैं ना। ..... अक्षर बहुत सहज है। तो देखो, ये क्या कहते हैं– आओ, हम डूब मरे हैं, पापी हैं, निगुड़े हैं। निगुड़े क्यों कहते हैं? कि वो जो पापात्मा हैं, गुरू वो किया हुआ है। हम निगुड़े हैं। .....फिर गुरु एक है। उनको हम जानते ही नहीं ..। कोई जानते हैं कि वो गुरू भी है? ये तो हमेशा कहे– ओ गॉड फादर। ऐसे कभी नहीं कहेंगे– ओ गॉड फादर कम प्रिसेप्टर। ऐसे कहेंगे? ना। प्रिसेप्टर माना गुरू। यहाँ दुनिया में कोई जानते हैं? ये सिर्फ फादर कहते हैं। अच्छा, अभी कहते थे ना– पतित–पावन। पतित–पावन तो गुरू हो गया। सर्व का पतित–पावन। सर्व का सद्गति दाता, फिर तो एक हो गया ना। अभी सर्व का सद्गति दाता पतित दुनिया में कभी मनुष्य हो सकते हैं? तो बाबा कहते हैं– देखो, कितनी एडल्टरेशन, करप्शन, वो श्री–श्री 108 जगतगुरू। जगत् माना सारी दुनिया। अभी देखो, इस समय में जगत्गुरू कहलाने वाले तो साधु लोग हैं ना। बोलते हैं ऐसे पाप बोलने वाले, उनका भी मुझे उद्धार करना है। किन्हों द्वारा? अरे, इन कन्याओं द्वारा। ...भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा– ये सभी किसके थे? कौरव की सेना में थे। सेना–वेना तो नहीं थी ना। किन्हों से उनका उद्धार हुआ? कन्याओं से। कन्याओं ने ज्ञान के बाण मारे। उसमें कुछ–न–कुछ सुना तो है ना। तो कन्याओं ने ; ये सभी कन्याएँ हैं ना। ये सब.. ब्रह्माकुमारी और कुमार। यहाँ माता जिसको कहा जाता है..कोई भी नहीं हैं। कन्याएँ और कुमार और कुमारी। भाई–बहन होना चाहिए ना, नहीं तो डाडे का वर्सा कैसे मिलेगा! तो ज़रूर ब्रह्माकुमार–कुमारी भाई–बहन बने तब डाडे का वर्सा मिले। पूछेंगे ना– वर्सा कहाँ से मिलता है? किस प्रकार से वर्सा...? वर्सा मिलता है डाडे से। कौन–सा वर्सा मिलता है? स्वर्ग की 21 जन्म की बादशाही, 21 पीढ़ी। तुम यहाँ क्या लेने आए हो? कमाई तो देखो! अभी इसको कहा जाता है– सच्ची कमाई सच्चे बाप द्वारा। जो बाप, बाप भी है तो शिक्षक भी है तो सद्गुरू भी है। सत् बाबा बोलने वाला, सत् टीचर बोलने वाला, सत् गुरू बोलने वाला और करके दिखलाने वाला। ऐसे नहीं कि चेला किया और खुद मर गया और सभी फॉलोअर यहाँ बैठ गए। समझो शिवानन्द मरा, कितने फॉलोअर्स हैं उनके? लाखों, बल्कि शायद करोड़ों भी हो।

अच्छा, वो तो चला गया। वो तो यहीं पर बैठे हुए हैं। तो वो है जिस्मानी गुरू, यह है रूहानी गुरू। बच्चे, समझो अच्छी तरह से। ये नई बातें हैं ना, बिल्कुल नई बातें हैं। तुम यहाँ बैठे हुए हो। जानते हो कि हमको कोई भी मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। देखो, बैठा है मनुष्य और तुम सब अंदर में जानते हो कि हमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। शिवबाबा, जो ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है, वो इस शरीर द्वारा हमको पढ़ाते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि कहाँ गई? शिवबाबा के तरफ में गई, न (कि) इसके तरफ में। वो सतसंग में जाओ तो तुम्हारी बुद्धि उस मनुष्य के तरफ में जाएगी। वो उनको गुरू कहते हैं, कुछ भी कहते हैं। सब कोई अपने–2 गुरुओं के पास जाते हैं ना।.....क्यों पिता कहते हो और फिर माता भी कहते हो? है तो एक; परन्तु बाबा कहते हैं मैं कैसे आऊँ, तुमको अपना बच्चा बनाऊँ? अपना एडॉप्ट कैसे करूँ? ...मुझे मात–पिता क्यों कहते हैं? देखो, बाप बोलते हैं कि पिता तो हूँ। अभी मैं आऊँ इसके तन में तो जैसे कि ये हमारी वाइफ भी हो गई और बच्चा भी हो गया। वाइफ क्यों कहते हैं? देखो, समझो वाइफ माना स्त्री; क्योंकि इन द्वारा शिवबाबाबएडॉप्ट करते हैं। ये हमारा बच्चा है। तो ये माँ भी बन गई ना। ये बड़ी माँ है, इनकी फिर माँ कोई नहीं है। फिर वो जो बच्ची है ना, तो देखो सरस्वती को फिर जगदम्बा कहा जाता है। तो क्यों? ये तो पुरुष है ना। ये इनकी सम्भाल कैसे कर सकेंगे! इसलिए उसको तुम्हारे लिए मुकर्रर कर दिया ड्रामा के प्लैन अनुसार। उनको मुकर्रर कर दिया कि तुम बच्चियों को सम्भालो। सरस्वती ज्ञान–ज्ञानेश्वरी, उनके बच्चे भी तो तुम हो ना। तो ये बड़ी माँ, वो छोटी माँ। ये पुरुष होने के कारण ये जगदम्बा को मुकर्रर किया हुआ है। अभी समझते हो अच्छी तरह से? ये बहुत गुह्य और गुप्त बातें हैं, सबकी बुद्धि में नहीं बैठेंगी, बैठेंगी नंबरवार। जैसे पढ़ाई होती है तो पढ़ाई भी सबकी बुद्धि में एक जैसी नहीं होती है। जो अच्छी तरह से पढ़ते हैं, स्कॉलरशिप भी लेते हैं, पास हो जाते हैं विथ रिस्पेक्ट। तो तुमको पास होना है विथ रिस्पेक्ट। ये जो पास हुए हैं, जो राजा–रानी बनते हैं, वो तो पास विथ रिस्पेक्ट। इनको एकदम बड़ी स्कॉलरशिप मिली ; क्योंकि इनको कोई भी सज़ा काटनी नहीं पड़ी। बाबा, सज़ा कोई भी न काटे, वो क्या उपाय है? बच्चे, जितना हो सके, तुम पतित हो, ये जो तुम्हारी खाद पड़ी है, उसका और कोई उपाय नहीं है, सिर्फ याद। ...भारत का प्राचीन योग किसने सिखलाया? वो है गीता वाला; पर था कौन गीता का सुनाने वाला? उन्होंने लिख दिया है कृष्ण। अभी ये तो झूठ हो गई। बाबा आकर समझाते हैं ना– मैं तुम बच्चों को सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों, गीता का भी राज़ समझाता हूँ। मैंने सुनाई थी ना। मैंने सुनाई, तुमने प्रालब्ध ली। राजयोग सिखलाया, तुमने सतयुग में प्रालब्ध ली, बस। पीछे प्रालब्ध ली, खेल खलास हुआ ना। ज्ञान गुम; क्योंकि विनाश हो जाए। विनाश हो जाए तो ये ज्ञान अभी परम्परा कैसे चल सके? ये चल नहीं सकता है। बाबा कहते हैं ये सिर्फ मैं देता हूँ ना। बस, तुम प्रालब्ध पाते हो। वहाँ कोई गीता–वीता सुनाते ही नहीं है। कोई शास्त्र वगैरह होते ही नहीं हैं। गुम हो गया ना। .....फिर इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन धर्म वालों का ज्ञान गुम नहीं होता है। वो परम्परा से चले आते हैं। ...ये क्राइस्ट कैसे आया था? नाटक दिखलाते हैं ना कि क्रॉस पर चढ़ाया, फलाना हुआ। उनको मालूम है ना। यहाँ बाबा कहते हैं मैं जो बैठकर तुमको ज्ञान सुनाता हूँ ना, ये कोई भी नहीं जानते हैं। ...जब–2 धर्म की ग्लानि होती है तब, सो भी अति ग्लानि कहते हैं, जब बहुत अति ग्लानि, भारत बिल्कुल दुःखी हो जाते हैं, जिस भारत को मैं आ करके सदा सुखी बनाता हूँ। तुम सदा सुखी बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो ना। अभी ये तो तुम बच्चों को दिल में रहा कि कोई भी जो बैठते हैं, ये नहीं सुना, ये हमारा गुरू नहीं है। ये नहीं सुनाते हैं। ये सुनते हैं। देखो, अभी ये तो समझ में आता है ना। और कोई जगह में ऐसे तो नहीं हो सकता है ना। तुम जानते हो, जो ज्ञान का सागर है, जिसको गाते हैं ज्ञान का सागर, पतित–पावन, सर्व का सद्गति दाता, गॉड फादर, अभी उनसे पावन बनना है ना। तो वो कहते हैं कि मैं तो साधारण तन में बैठा हूँ। तुम जब यहाँ बैठे रहते हो, तुम्हारा बुद्धि का योग बाप के साथ है। कौन–से बाप के साथ? आत्मा का बुद्धि का योग बाप के साथ

है। सभी आत्माओं का बाप है परमपिता परमात्मा, फिर सर्व बच्चों का। उनके बच्चे ठहरे ना। क्यों सर्व बच्चों का? सभी आत्माएँ पतित हो पड़ी हैं। ये साधु लोग कहते हैं कि नहीं, आत्मा कभी पतित नहीं बनती है, शरीर पतित बनता है। अगर हम जाते भी हैं गंगा वगैरह में स्नान करने तो शरीर को हम धोने जाते हैं। तो भी पतित तो हुए ना फिर। शरीर धोए तो भी तो पतित हुए; क्योंकि ये मनुष्य तो नहीं समझेगा ना। पतित जा करके सिद्ध करके दिखलाते हैं। तुम बच्चे तो वो रहते हो ना, ये पावन है ; परन्तु वो खुद तुमको सिद्ध करके दिखलाते हैं कि नहीं, हम पावन नहीं हैं। तुम बच्चों को समझाना चाहिए; पर वो समझ नहीं है। बाप कहते हैं बेसमझ हो। इतना भी नहीं समझते हो कि ज्ञान के पानी में ये स्नान...। समझते हो सभी पतित तो हैं ना। ...अभी तुम पहली–2 मूल बात कि जहाँ भी कोई सतसंग में ; तुम बहुत किया है। फिर बाबा समझाते हैं कि इसने भी 84 जन्म भक्तिमार्ग में सतसंग किए हैं। ये भी कहते हैं मैंने भी किया है। बात एक हुई ना। मैं कहूँ या बाबा कहे, बात एक ही रहती है। कहाँ भी कोई सतसंग में ये बुद्धि में सामने ये सुनाने वाला रहता है। अभी तुम अपन को आत्मा समझकर फिर समझते हो वो बाबा आया हुआ है, इस तन में समझा रहे हैं। इस जन्म की बात, कभी कोई सतसंग में ऐसे गए हो कि इसमें शिवबाबा बैठ करके सुनाते हैं! जाओ, अभी भी जा करके देखो, सारी दुनिया में जाकर देखो। ऐसा कभी कोई कह नहीं सके; क्योंकि मैं तुम सर्व को आया हूँ प्रैक्टिकल में। प्रैक्टिकल में ये महाभारत की लड़ाई ... है। ...ये सभी शरीर यहाँ खतम हो जाएँगे। आत्माओं को वापस जाना ही है। नाटक पूरा होता है ना। क्या घर नहीं जाएँगे? अभी तो छी–2 नाटक हो गया है ना। बहुत ही दुःखी हो गए हो ना। दुःखी होते(ने) कारण तुम मुक्ति के लिए ये सन्यासी तुमको इतना यज्ञ, तप, दान, पुण्य करने और मठ.....किसके लिए? मुक्ति के लिए यानी शांतिधाम में चले जाएंगे। कोई ऐसे नहीं है कि ब्रह्म में लीन होना है या ज्योति ज्योत में समाई है या फलाना; क्योंकि बहुत होते हैं ना, जो ब्रह्मसमाजी होते हैं, वो ..... ज्योति ज्योत में समाय जाती है। ...पतित–पावन, हमारा बिलवेड मोस्ट बाबा आ करके हमको फिर स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं। ये इतने बच्चे हैं ना, इनमें कोई भी, समझो कि कोई 100 परसेन्ट निश्चय बुद्धि भी है, कोई 90, कोई 80, कोई 70, कोई 60, कोई 50, कोई 1 परसेन्ट भी। अभी 1 परसेन्ट वो तो बिल्कुल ही फेलीयर हो गया यानी इस सभा में, बाबा इसकी बात करता है। कोई एक सभा तो नहीं है ना। यह बाबा के स्कूल बहुत हैं। ..सब(को) निश्चय नहीं बैठता है तो भी बैठते हैं। कोशिश करते हैं कहाँ निश्चय हो जाए। (नि)श्चय हो जाए कि बाबा पढ़ाते हैं। बस, घर में जाएँ, वो बात कि बाबा पढ़ाने आए हैं, भूल जाते हैं। यहाँ निश्चय कराते हैं। समझते हैं शिवबाबा बरोबर में। वो कहते हैं मैं नहीं पढ़ाता हूँ। मैं पतित हूँ। मैं पूरा–2 भगत हूँ यानी 63 जन्म भक्ति की है। तत् त्वम्। तुम जो ब्राह्मण हो, तो ब्रह्मा और ब्राह्मण एडॉप्टेड चिल्ड्रेन हुआ, तो तुम भी सब भगत हो ना और भगत भी कैसे? एकदम पूरे। जैसे बहुत भक्ति करते हैं उनको कहते हैं ठोमा भगत। तो तुम बड़े–2 भगत एकदम। तुमने 63 जन्म भक्ति की है। 21 जन्म वर्सा भोग करके फिर 63 जन्म भक्ति की है। वहाँ कोई ज्ञान, गीता का शास्त्र नहीं होता है। भक्ति के बाद, सब सन्यासी कहते हैं तुमको– ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। अक्षर का अर्थ समझते नहीं। तो खुद वैराग्य करते हैं हर्थ एण्ड होम यानी.. घरबार से हम कोई भी पैसा नहीं लेते हैं, हमको भीख पर चलना है। उसको कहा जाता है हद का वैराग्य। तो होना है बेहद का वैराग्य। ज्ञान, भक्ति, पीछे वैराग्य बेहद का; परन्तु ड्रामा के अनुसार उन सन्यासियों का है, जो ज्ञान तो हो गया, भक्ति, फिर वैराग्य कौन–सा? ये घरबार छोड़ना। घर–बार छोड़ करके जंगल में रहने का। अभी देखो कहते हैं ना– हमने हर्थ एण्ड होम छोड़ा। अभी कोई जंगल में है? जंगल (में) जाओ, पहाड़ों पर जाओ, तो सब कुछ ऐसे ही खाली मिलेगा। वो जो सतोप्रधान थे, सन्यासियों की बात बाबा समझाते हैं, वो हो करके तमोप्रधान। ताकत तो रही नहीं। जैसे वो राजाई की ताकत थी, वो ताकत चल–चल कर, 84 जन्म हो गए, अभी क्या ताकत है? हम कहाँ थे, अभी कहाँ हैं और धर्म को ही भूल गए हैं एकदम। तो देखो, ये जो

यहाँ की गवर्मेन्ट है, वो भी कहते हैं– हम धर्म को नहीं मानते हैं। ये क्या कहते हैं अंग्रेजी में?.....यानी हम धर्म को नहीं जानते हैं। ये धर्म में ही नुकसान है बहुत। लड़ते हैं–झगड़ते हैं। मैं हिन्दू (हूँ), मुसलमान (हूँ)। एक हो जाओ। अभी मिलते रहते हैं, कॉन्फ्रेन्स करते हैं– हम सभी धर्म वाले एक मत हो जावें। अभी देखो, इन मुर्दों से पूछो। मुर्दों माना जो मुर्दा होने वाला है; क्योंकि बाबा अभी आया हुआ है ना। तो सभी कब्रिस्तान बनने वाले हैं। उनको मालूम नहीं है...। बाप आकर कहते हैं– अरे, तुम सबको मुर्दा बनने का है। ये कब्रिस्तान बनने का है। तो मुर्दे कहते हैं सभी। कॉन्फ्रेन्स...हैं– हम सभी धर्म वाले एक कैसे हो जावें। ...ये तो वैराइटी झाड़ ...क्रिश्चियन फलाना। ये एक किसको कहते हैं? कुछ समझते नहीं हैं कि हम धर्म वाले एक कैसे हो जावें। यानी एक हो करके शांति होगी? ये हो ही नहीं सकता है बिल्कुल ही। हाँ, ये ज़रूर है कि भारत में जब एक धर्म था, तब सब कुछ था। पवित्रता भी थी, सुख भी था, शांति थी। ... एक धर्म था ना। उसको कहा जाता है अद्वैत माना देवता, पीछे होता है द्वैत माना दैत्य। तो पहले–2 अद्वैत धर्म था। तुम मीठे बच्चे याद करो ना। तो तुम इस धर्म वाले हो ना। दैवी धर्म तो बहुत सुख का देने वाला है ना। तुमने 21 जन्म सुख देखा। वर्सा लेती हो, तो फिर 21 जन्म सुख देखेंगी। फिर तुम जानती हो ना कि फिर भी पुनर्जन्म ले करके हमको ज़रूर 84 भोगना ही है। तुमको भोगना पड़ेगा ना। अभी–2 तो निश्चय हुआ तुम बच्चों को कि हमने 84 जन्म पूरा भोगा है, हमको ही पहले जाना है और फिर आना है। 84 का चक्कर भारत वाले ही भोगते हैं और भारत वालों को ही समझाते हैं। भारत में ही आते हैं। तुम बच्चों ने 84 जन्म पूरा किया है। अभी ये तुम सबका, एक को नहीं कहते हैं– बहुत जन्म के अंत का अंत का भी अंत। एक कोई की कैसे बात होगी! नहीं, बहुतों को कहते हैं। ये पाण्डव सेना को बैठ करके समझाते हैं। तुम्हारा नाम पाण्डव सेना रखा है। पण्डे जो तीर्थ यात्रा पर ले जाते हैं। तुम पण्डे रूहानी यात्रा सिखलाते हो; इसलिए नाम पड़ा है– पाण्डव, पंडे। कोई भी राज्य नहीं है..। न कौरव राज्य है, न पाण्डव राज्य है। दोनों को नहीं बिल्कुल ही। वो भी प्रजा है, तुम भी प्रजा हो और हो भी आपस में भाई–2। कहते हैं ना– पाण्डव और कौरव आपस में भाई–2 थे यानी एक ही गाँव के सब थे; परन्तु पाण्डवों के...तरफ में परमपिता परमात्मा। उनको बैठ करके ये माया रावण पर जीत पहनना सिखलाया। लड़ाई की तो बात नहीं। तो देखो, कितना महाभारत की लिखते हैं। है कुछ महाभारत में ये सभी बातें! तो झूठ हुआ ना। महाभारत भी झूठ; क्योंकि उनमें कोई लड़ाई की बात नहीं। भगवान आ करके लड़ाई थोड़े ही कराएँगे। सो भी लड़ाई की कितनी बातें बहुत हैं। अरे, कृष्ण का जो निकलता है एक अंक कहाँ मद्रास या कहाँ से, वहाँ कृष्ण की हत्या का, बस स्वदर्शन चक्र चलाया, फलाने को मारा। अकासुर मारा, बकासुर मारा, फलाना मारा, बस मारा ही मारा, हिंसा ही हिंसा। स्वदर्शनचक्र के तुम देखो, चित्र तुमको दिखलावें बहुत। एक गीता है ये चित्रों की। ये परमानंद की गीता बनी हुई है। अच्छा ...दिखलाऊँ? बाबा के पास समझाने के लिए रहती है। बस कृष्ण ने(का) स्वदर्शन गया, ये शीश निकल गया बिचारे का.....। यह जरासिंध को मारा। क्या कृष्ण किसको मारेंगे? स्वर्ग का प्रिंस और क्या–2, बड़ी हत्या दिखलाते हैं। हत्या ही हत्या, उनके बारे में निकलती है महीने में। जहाँ देखो तहाँ कृष्ण के हाथ में स्वदर्शन, अकासुर मारा, बकासुर मारा, फलाना मारा। ....अहिंसा परमोधर्म। अभी अहिंसा परमोधर्म की मुख्य बात है कि एक/दो के ऊपर काम–कटारी नहीं चलाना। अभी ये जो भारतवासी हैं ना, वो अहिंसा किसको (समझते हैं)– गैया को नहीं मारना चाहिए। गइयों को कोस नहीं करना चाहिए। इसलिए वो कहते हैं– भई, ये हिंसा नहीं करो, गऊओं को मत मारो। वो हिंसा नहीं, ये हिंसा है। ये गउओं को, ये माताओं को, बच्चों इनका कोस मत करो। इनके ऊपर काम–कटारी नहीं चलाओ। बाबा ऐसे कहते हैं। अभी एक/दो के ऊपर ये काम–कटारी नहीं चलाओ। ये है महान हत्या। इसको कहा जाता है बड़ी ते बड़ी हिंसा। तभी देवी–देवता धर्म वालों को दिखाई (है)– अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म। न काम–कटारी, न कोई लड़ाई–झगड़ा। यहाँ दोनों ही है। काम–कटारी की भी हिंसा है

और विकार। उसमें नंबर वन कड़े ते कड़ी, जो तुमको आदि,मध्य,अंत दुःख देती है, कहा है ना– ये जो काम है, तुम्हारा महाशत्रु है। बाबा, आदि–मध्य–अंत कब से? द्वापर से, जब तुम वाममार्ग में आते हो....। देखो, ये सीढ़ी है ना। तुम थे। सीढ़ी तुम उतरे हो ना। 84 जन्म किसने लिया ? भारतवासियों ने लिया ना। भारतवासी तो ये थे ना। यहाँ ये स्वराज्य था ना। पीछे ज़रूर 84 का पुनर्जन्म लेना पड़े ना। ज़रूर गाते तो हैं बरोबर। फिर सतयुग के बाद त्रेता, उसमें 8 जन्म। 84 जन्म तो चाहिए ना।....बाप बैठ करके देखो दिखा रहे हैं। पीछे देखो राम का राज्य है। अच्छा, पीछे देखो ये दुनिया आधा पूरी हुई ऊपर वाली, पीछे आधा नीचे वाली। तो देखो भक्तिमार्ग शुरू। तो देखो, ये राजा बैठ करके पहले–2 लिंग की पूजा करते हैं। बाप ने समझाया है कि भक्तिमार्ग शुरू होगा तो अव्यभिचारी और व्यभिचारी। समझा ना ; क्योंकि डाका ... है ज़रूर। 84 डाका ठहरा ना। एक–2 जन्म का एक–2 डाका। तो पहले चढ़ते हो यहाँ से। यहाँ से जम्प मारते हो, एक सेकेण्ड में डाका चढ़ जाते हो ऊपर, जो 84 डाके उतर आए हो। यहाँ बाप कहते हैं सेकेण्ड में जीवनमुक्ति बनाइए। तुम अभी क्या पढ़ते हो? क्या बनते हो? देखो, यहाँ एकदम नीचे से एकदम ऊपर, तो इसको कहा जाए– जीवनमुक्ति एक सेकेण्ड में। कौन देते हैं? बाप देंगे, और कौन देंगे! सभी पट पड़े हुए हैं ना। इसको कहा जाता है सभी पट में नीचे आ गए हैं एकदम। अभी तुम बच्चों (को) यहाँ कहते हैं– बस, सिर्फ बाप को याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। अभी सेकेण्ड भी कहेंगे ना; क्योंकि साक्षात्कार तो हो जाता है ना। निश्चय तो हो जाता है। अभी हमें मालूम है यहाँ नाटक पूरा हुआ। हमको ज़रूर जाना है घर। कैसे जावें? बाबा को कहे। वो तो ये लिख दिया– कैसे घर जाऊँ? कृष्ण बैठा हुआ। वो हमारी बाँह पकड़ेंगे, ये फलाना करेंगे। कैसे घर जाऊँ, वो बातें नहीं हैं कृष्ण की। ....बाबा कहते हैं– घर जाना है ना, बस घर को और मुझे याद करो। सिर्फ घर को न याद करो; क्योंकि घर रहने का स्थान है। उनके लिए नहीं याद करो, जिस रहने के स्थान को ये सन्यासी भगवान कहते हैं, ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म में आए हुए हैं। अच्छा, तुमको कहते हैं, तुम घर को याद करो और बाप को याद करो। बाबा, पहले घर को याद करूँ, बाबा को (या) बाप को? नहीं, पहले बाबा को याद करो; क्योंकि वो तुमको घर का रास्ता बताते हैं। तो मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। अगर घर को याद करेंगे, जैसे सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं, तो कुछ भी नहीं, तुम्हारा एक भी पाप नहीं कटेगा। मुझे याद करना। तुमको .. कहते हैं– सिर्फ घर को याद न करो। नहीं। बाप को याद करो। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो, तुम्हारा जो पाप का बोझा है ना...। तभी मुझे कहते हैं– पतित–पावन। अभी विचार करो कि पतित–पावन कहा जाता है परमपिता परमात्मा को। वो तो है रूह। अभी ये कैसे पतित–पावन करते होंगे– कोई समझते होंगे? अभी तुम समझ सकते हो। दुनिया में कोई कुछ भी नहीं समझ सकेंगे कि बाबा...सर्व का सद्गति दाता, पतित–पावन, ये सर्व को पावन कैसे बनाता है। एक तो जलते हैं, दूसरों को बैठ करके योग सिखलाते हैं; क्योंकि इनको आना है, स्वर्ग की स्थापना ज़रूर करनी है पहले, जिसमें तुम भारतवासी बच्चे रहेंगे। ...ज़रूर भारत में ही तो आएगा ना। तो देखो, अभी बाबा आया हुआ है और शिवजयन्तियाँ मनाय रहे हो। इसका ख्याल नहीं करना चाहिए कब आया। अभी कब आया। ये कोई कृष्ण का थोड़े ही वो जन्म देते हैं– घड़ी ले करके भई देखें.... अभी 12 बजकर 1 मिनट हुआ है, जन्म हुआ है। अभी शिवबाबा ने प्रवेश किया, कैसे मालूम पड़े कब आया। कभी कुछ कह नहीं सकते हैं। बहुत कुछ साक्षात्कार होते रहे, ये होते रहे, हम क्या समझें! जब समझाने लगे तभी भी पूरे नहीं समझते थे कि क्या बात है! इतना दिन लगा है तुमको! पहले तो हमारे पास वो ही था, सर्वव्यापी जो है। ऐसे नहीं कहते थे क्या ! हम फिर भी सर्वव्यापी कहते थे। जैसे ये लोग सर्वव्यापी की गाँठ बाँध ली है ना, गाँठ टूटती नहीं है। हमको सर्वव्यापी की बात आहिस्ते–2 टूट करके, बहुत समय के बाद मालूम पड़ा बाबा पढ़ाय रहे हैं। तो बाबा अभी दिन–प्रतिदिन बहुत गुह्य बातें सुनाते हैं और ऐसी समझाते हैं जो कोई भी हो पत्थर बुद्धि, अहिल्या, कुब्जा, गणिका, वो भी समझ

जाए। .... सन्यासी और बड़े–2 आदमी लोग बिल्कुल नहीं समझ सकते हैं। जो धनवान हैं, बहुत पढ़े हुए हैं ना। तो समझाते हैं– पढ़ा तो ये भी है ना। बाबा समझा रहे हैं ना कि इसने भी बहुत शास्त्र पढ़े हैं और गुरू भी बहुत किए हैं। पूछते हैं– बाबा, ये गुरु–मुरू को छोड़ देवें। अरे, उसे न छोड़ो, पकड़े रहो। तुमको मेरे से वर्सा नहीं मिलेगा। ये बाबा कहते हैं कि अभी जाना है, तो आशिक जो हो आधाकल्प के ; तुम सतयुग और त्रेता में आशिक नहीं थे। तुम कभी बाबा माशूक को याद नहीं करते थे। समझते हो बरोबर। सुख में तुम सिमरण नहीं करते थे। हे आत्माएँ! जब तुम सुख में थे तब तुम आशिक और माशूक की बात नहीं थी। अभी जब दुःख में हो तभी होती है आशुक की माशूकों से बात कि हे बाबा, हे सब आशिकों का एक माशूक; क्योंकि सर्व की सद्गति दाता एक है ना। बाप भी एक है। टीचर भी एक है। तो कहते हैं– बाबा, आओ अभी, आ करके हम पतितों को पावन करो; क्योंकि पतित बन गए हैं। कैसे बन गए हैं? कोई भी नहीं जानते हैं। किसने पतित बनाया, कोई नहीं जानते हैं; क्योंकि वो कहते हैं पतित .. थोड़े ही होते हैं। अरे, हे राम जी, ये संसार तो बना ही नहीं है। ..... राम जी के ऊपर ये ज्ञान का चर्चा सारा चला। रामजी को यहाँ प्रजावत्सल दिया ना.....। अभी क्या झूठी हुई ना। संसार बना ही नहीं। दुनिया है ही नहीं। .... देखो, राम (की) सीता चोरी हुई पड़ी क्या हुआ। यानी ये भी कोई बात है– संसार बना ही नहीं है। मनुष्य जो कुछ संकल्प करते हैं, उनके लिए वही दुनिया है, ऐसे कह देते हैं। बस,.. सो भी परमात्मा हैं। जो संकल्प करें वो बनना है। जितना चाहिए शरीर लेवें, ये लेवे, पत्थर लेवे, कच्छ लेवे, मच्छ लेवे। सब उनकी लीला है। लीला ही लीला है। जहाँ देखो तहाँ लीला ही लीला है। आहा! उन्हीं की लीला है! बस हँसते रहते हैं। लीला ही लीला है। बस,.. बता दिया, अभी मेरी लीला है। अनेक मत हैं ना। अरे, ये ढेर के ढेर मत। एक मत नहीं समझो, एक बाबा साईं है। नहीं, मैं बाबा साईं, ब्रह्मा है, पारसी,हिन्दू,मुसलमान, जो भी जात वाले हैं ना, गुजराती–मराठी सबके पास बाबा साईं हैं। कोई न कोई है। कोई न कोई किस्म के हैं; क्योंकि सब धर्मों में बाबा साईं की कॉम्पीटीशन चलती है ना। नहीं, बाबा साईं तो सबका एक है ना। वो बैठकर तुम बच्चों को बड़े प्यार से, प्रेम से सब समझाते हैं। मैं तो आता हूँ ना। मुसाफिर हूँ ना। एक मुसाफिर। मैं आता हूँ। एक मुसाफिर के लिए सभी सजनियाँ ; लेकिन सजनियाँ .. छी–2 हो गई हो। मैं आया हूँ तुमको गुल–2 करके और वापस ले जाता हूँ। कहाँ? सुखधाम में। एक मुसाफिर वो हमेशा गोरा। तुम सब कालों को गोरा बनाने के लिए आया है। सजनियाँ हो ना। वो एक ही साजन आया है। तुम सबको श्रृंगार करके ये जीवनमुक्त बनाते हैं। फिर तुम्हारी आत्मा भी पवित्र, तो ये शरीर भी अच्छा गोल्डन। एक मुसाफिर है ना..। एक मुसाफिर कहो या ब्राइडग्रूम कहो, आते हैं, तुम बच्चों को ज्ञान से श्रृंगार करके फिर सभी दुःखों से छुड़ाय देते हैं। फिर अमरलोक में तुम कभी भी दुःख नहीं देखेंगी– सुख ही सुख, सुख,शांति,पवित्रता। बाकी जो सजनियाँ हैं, उनका पुराना शरीर छुड़ाय करके अपने पास बिठाय देता हूँ, जहाँ से फिर वो आएँगे; क्योंकि पहले तो प्युअर आएँगे ना। पहले जो भी आते हैं ; देखो, बच्चा पैदा होगा, पहले सतोप्रधान, फिर सतो,रजो, बुड्ढा होगा वो तमोगुणी, फिर शरीर छोड़ेगा। हर एक बात ऐसे ही है। ये जगह भी ऐसे ही है। सौ/डेढ़ सौ वर्ष के बाद फिर ये पुरानी हो जाएगी। तो पहले सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो। हमेशा चार भाग होते हैं। ये दुनिया के भी चार भाग हैं– सतो(प्रधान),सतो,रजो,तमो। युग भी चार और ये लीप युग, धर्माऊ युग, कल्याणकारी युग। अच्छा, अभी टाइम हुआ होगा! 8 बजा होगा! अभी समझते हो यहाँ कौन पढ़ाते हैं। आगे तुम जाते थे। सतसंग में ये भी जाते थे। तो मनुष्य पढ़ाते हैं ना। ये फलाना गुरूओं का नाम, ये कृपानन्द.....ये ज्ञानानन्द ये फलानानंद, वो पढ़ाते थे ना। अभी तो वो नहीं पढ़ाते हैं ना। ये बाप पढ़ाते हैं इस द्वारा। वो नहीं पढ़ाते हैं। देखो, वो नई बात हुई ना। जब बाप पढाते हैं, और क्या चाहिए! परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमपिता परमात्मा की। अब क्या परवाह! जब वो मिला तो फिर रोने–करने की बात ही छूट जाती है। जिसका बाप ऐसा, जो स्वर्ग का वर्सा देते हैं, उनको कितनी खुशी होनी चाहिए! गाया हुआ है– अगर अति इन्द्रिय सुख का वर्णन पूछना हो तो गोप और गोपियों से पूछो। जो बाप से स्वर्ग की बादशाही का वर्सा ले रहे हैं। ... क्या–2 चाहिए! वो सुख को सन्यासी

जानते ही नहीं हैं। वो कहते हैं कागविष्ठा समान है और वो निवृत्ति मार्ग वाले हैं। ये भी जानते हो ना, इनका राज्य सतयुग में किसने स्थापन किया होगा। ... गॉड फादर। वो है प्रवृत्ति मार्ग। वो है निवृत्ति मार्ग। तो धर्म ही अलग है। तुम्हारा अपना धर्म न होने कारण तुम जाकर सन्यासियों...। सन्यासी धर्म के तो हो ही नहीं। जब हो ही नहीं, तुम वो गुरू कैसे कर सकते हो? अच्छा, फिर जब पतित कोई पण्डित है यानी जो बाल–बच्चे पैदा करते हैं, तुम उनको गुरू कैसे करते हो! वो तुमको सदगति...जबकि वो खुद ही दुर्गति में हैं, वो तुम्हारी सद्गति कैसे करेंगे! ..... तुम्हारी अंधश्रद्धा और नॉनसेन्स बुद्धि। तुम्हारी इतनी नॉनसेन्स बुद्धि किसने की? ये रावण ने.. जिसको जलाते आते हो, मुआ जलता ही नहीं है। अच्छा, टोली ले आओ। अभी ये रावण की जो सम्प्रदाय है, सारी जल जाएगी, दुनिया भी जल जाएगी; क्योंकि तमोप्रधान होने के बाद ये बड़ी पतित हो गई है और पतित दुनिया भी है। इसलिए शरीर बनते हैं ना, वो भी ऐसे ही तमोप्रधान। शरीर भी तमोप्रधान तो आत्मा भी तमोप्रधान। वहाँ सतोप्रधान, तो आत्मा भी सतोप्रधान, तो ये दुनिया भी सतोप्रधान। तुम जब लक्ष्मी की पूजा करते हो, देखो घर को पोची लगाते हो, क्यों? सिर्फ पोची लगाते हो। क्यों, सिर्फ पोची क्यों लगाते हो? वो तो हम बरस–2 उनको बुलाते हैं पैसा लेने के लिए। तो ये पोची लगाते हैं; परन्तु जिस बाप से तुम ये ज्ञान लेते हो, तो उनके लिए कौन–सी पोची लगानी चाहिए? ये सारी दुनिया खतम करनी चाहिए। ... चाहिए नई दुनिया रहने के लिए, जिसके लिए गाया हुआ है– देवी–देवताओं का पैर कभी भी इस पृथ्वी पर पड़ नहीं सकते हैं। साक्षात्कार भले करो; पर देवताएँ इस पतित सृष्टि पर पैर.... अच्छा, दूसरी बात बच्चों को समझाना– शाम को क्लास हो नहीं सकेगा। कहाँ जाएगा? खुदा जाने यानी बाबा जानें और बाबा कहते हैं कि कोई भी बच्चियाँ स्टेशन पर नहीं जाओ। क्यों? क्योंकि ...बीड़ी–सिगरेट...फलाना बहुत बास आती है वहाँ भी। तो तुम लोग तकलीफ नहीं करना। मैं यहाँ से छूट जाऊँगा। बाबा कहते हैं– ये तो बाबा पसंद नहीं करते हैं। मनुष्यों को मालूम नहीं है कि ये है कौन। कोई को भी मालूम नहीं है कि ये जो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं, ये तन–मन–धन की सेवा करके भारत को स्वर्ग बना रही हैं। इसलिए इस भारतमाता के लिए ही गाया हुआ है– वन्दे मातरम् और ये लोग वन्दे मातरम् कहते हैं भारत धरनी को। माताओं को नहीं कहते हैं। माताएँ सभी पतित। तो भला उन माताओं को छोड़ करके (धरती) माता को कहते हैं वन्दे मातरम्। अभी धरती भी है मुट्ठी पतित। अभी पतित को वन्दे मातरम् भी नहीं कर सकते हैं। कोई भी पतित को वन्दना नहीं की जा सकती। कुमारियाँ हैं, माता–पिता भी वन्दना करते हैं। जब मुट्ठियाँ शादियाँ करती हैं तो मुट्ठियों को वन्दना करनी पड़ती है। देखो, कितना फर्क हो जाता है! अभी बाबा कहते हैं पतित न बनो। अगर शादी की, फिर वो डाका उतरना; क्योंकि उसी विख की टेस्ट की ना, तोबा–2 ! वो विख की टेस्ट छोड़ते ही नहीं। बाप कहते हैं मैं बादशाही देता हूँ। तुम विख पीना छोड़ो। मैं अमृत पिलाता हूँ। अरे तोबा–तोबा–तोबा ! छोड़ते ही नहीं हैं बहुत। विख नहीं मिलती है– विख दे, विख दे, मैं मारता हूँ नहीं तो ....। ऐसे–2 केस होते हैं। विख हाय विख !....जैसे ये जो आधाकल्प का दुश्मन है ना। अरे बच्ची, तुमको गोपिकाओं की कथाएँ सुनाईं ना। हमारे पास तो ढेर आती हैं। बस, विख दो, नहीं तो मैं कूदता हूँ। विख.. देती हो, नहीं तो मैं जाता हूँ, कूदता हूँ। अभी वो क्या करे! तुमको ये गोपिकाओं की कथाएँ सुनावें ना, जिनको ये जबरजस्ती नगन करते हैं। बात मत पूछो। अनेक प्रकार की ये गंद होती है। तो पाप का घड़ा भरता है ना। कई तो मर भी जाती हैं। होते हैं केसेस। सुनते भी हो अख़बार में। अरे, ये तो बनी–बनाई बन रही, इनका फिक्र क्या करना है! ये भी ड्रामा में था। तुम क्यों फिक्र करते हो? ये तो फिर कल्प–2 होता रहेगा। फिक्र की तो कोई बात ही नहीं है। ...बहुत अख़बार वाले गंदे–2 चित्र लिखते हैं। बैठ करके भौंकने दो। जो कलंकीधर बनते हैं उनके पिछाड़ी कुत्ते भी तो भौंकेंगे ना। गाया हुआ है ना कि जो कलंकीधर बनते हैं यानी जो बादशाह बनते हैं, उनके पिछाड़ी, इतना ही तो कुत्ते ना। जास्ती नहीं, या **DOG** या **GOD**। ठीक है ना। अच्छा, वो तो गॉड एण्ड गॉडेज। अच्छा, यहाँ ओ कुत्ते का बच्चा, ऐ गधे के बच्चा, ऐ उल्लू का बच्चा। ज़रूर होशियार बच्चे कहेंगे कि तुम क्या गधा है, जो हम तुम्हारा बच्चा है! बाबा ने वो जो

समझाया ना– वो कोर्ट में जज ने उनको कहा– तुम कोई गधा है, बातचीत नहीं करते हो। साहब, हम अगर गधा तो तुम गधा नहीं? हम तो सभी एक पिता की औलाद हैं। अगर तुम गधे हो तो मैं भी गधा हूँ। अभी तो वो जज क्या करे! कह सके कुछ! बिल्कुल नहीं। नहीं तो ऐसे ही कोई किसको कह देवे तो ...ऑफ कोर्ट हो जावे। ..... उसने खुद ही कह दिया– ऐ गधे का बच्चा। तो उसने बोला– हम गधे का बच्चा तो तुम भी गधे का बच्चा। तो गाते हैं ना यहाँ बहुत अच्छा। हो गया! अच्छा, बच्चे, हम आते हैं, ब्रेकफास्ट करते हैं; क्योंकि कोई से मिल न पाया या क्या! हम भी बैठ करके खाते हैं, तुम भी बैठ करके खाओ। हम ब्रेकफास्ट करते हैं। ठीक है ना। ऐसे नहीं समझो कि हमको कोई खास...। हम सब बैठे हैं ना। अब ये...ले जाने की तो चीज़ नहीं है ना। खाने की चीज़ है। तुम बैठकर खाओ, मैं भी खाता हूँ। नहीं, हाथ से खाना अच्छा है। खा लो। हम ब्रेकफास्ट करते हैं मिल करके। सबसे बैठकरके तुम्हीं से बैठ करके खाऊँ मिल करके, वो खाते हैं। खाओ बच्चे। शिवबाबा को याद करके खाना। समझा ना। अच्छा, ये फिर कहते हैं हम जो खाने वाला हूँ, वो कोई शिवबाबा तो नहीं खाएगा ना। वो वासना भी नहीं लेंगे ना। हम जो खाता हूँ तो शिवबाबा को याद करके खाता हूँ। तुम भी ऐसे ही खाओ। यहाँ भी ये है घर। बाप, दादा और बच्चे। घर हुआ ना। इसको कहा जाता है ईश्वरीय घर। पीछे होगा दैवी घर, पीछे क्षत्रिय घर, फिर वैश्य घर, फिर शूद्र घर। कोई को शुगर होवे, क्या बोलते हैं उसको? डायबिटीज़। डायबिटीज़ जिसको है, वो हाथ उठाओ। बच्ची के साथ बैठ करके ये गाते थे– तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से खेलूँ। है याद ? किसको कहते थे? एक को कहते थे ना। तो वो दिन आखिर आया आज। जिस दिन का रस्ता तकते थे वो दिन आया आज, जो इनके साथ बैठकर खाते हो और उनसे वर्सा लेते हो। (किसी ने कहा– बाबा, वहाँ से मैं थक गई। अब दुबारा फिर बहुत बड़ा...) नहीं बच्चे, रात फिर कहेगी कि अच्छा, कालीदह में इन सबको समझाओ, वो भी दिन आ जाएगा। तुमको यहाँ ही बिठा देगा, मैं निकल जाऊँगा। स्टेशन पर माताएँ नहीं आना बिल्कुल, ये अच्छा नहीं है वहाँ। (किसी बहन ने कहा– भाई लोग जावेंगे) नहीं। ...जो मोटर है तो उनको तकलीफ नहीं है ऐसे भी। बाकी बस में ये सब, बाबा बैठा है, पीछे क्या करेगी। वहाँ अच्छा नहीं लगता है। गुप्त बैठा है गुप्त। (किसी ने कहा–.....कोई को कुछ चाहिए क्या?) नहीं, इनको बच्ची कुछ भी पूछने का करने का या कुछ भी नहीं है। बच्चों को चाहिए सिर्फ बाप से वर्सा। सो तो सबको अपने–2 पुरुषार्थ अनुसार मिल रहा है। तुम बच्चों का आपस में इतना प्रेम होना चाहिए एक/दो से, खीर खण्ड जिसको कहा जाता है। कभी भी घर में, अपने बाल–बच्चे या उनसे लून–पानी नहीं होना चाहिए। नहीं तो फिर क्या होता है, तुम बाप, टीचर और गुरू तीनों की निंदा कराते हो। वो तो कहते हैं गुरू का निंदक। ये फिर कहते हैं ना– बाप, टीचर और गुरू, ये तीनों की निंदा नहीं कराना। निंदा कराने से बिचारा बाप के पास आ करके वर्सा लेने से हट जाता है। कोई भी कर्म ऐसे करते हो जिससे किसको संशय पड़ता है कि वाह! ये ये सीखते हैं! ये मारते हैं, क्रोध करते हैं, बोलते हैं हम पाँच विकारों को जीतने जाते हैं। तो ये कैसे हो सकता है! तो वे संशय कारण आते नहीं हैं। फिर यहाँ बच्चों को तो बिल्कुल ही शांत–मीठे हो (रहना) चाहिए। तो बाबा वहाँ हमेशा कहते हैं सबको प्यार करो। प्यार करेंगे तो सज़ा नहीं मिलेगी। अगर प्यार न करेंगे, किसको दुःख देंगे तो दुःखी हो करके मरेंगे। दुःख सहन करके, सज़ा भोग करके, पीछे आ करके हल्का पद पाएँगे। इसलिए बहुत मीठा बनो; क्योंकि बाबा सबसे प्यारा है ना। बिलवेड मोस्ट। तो उनके बच्चे भी बिलवेड मोस्ट होने चाहिए। बोलना ऐसा...। देखो, रूप–बसन्त की कहानी सुनी है ? अच्छा, तुम सभी बच्चे बाबा के रूप हो। जैसा बाबा तैसा तुम। बाबा के भी मुख में है अविनाशी ज्ञान रत्न जो आ करके देते हैं। तुम भी हो रूप–बसन्त यानी आत्मा रूप है और ये ज्ञान का सागर है, मुख से रतन निकलते हैं। ...एक–2 रतन लाख–2 रूपये के हैं। अभी बताओ तुम कितनी कमाई करते हो ? अनगिनत! वहाँ कभी भी अंदाज होता नहीं है। .. हीरे और ये भित्तरों के माफिक, उनका क्या वैल्यू। तो इतना ऊँचा बाबा देते हैं। ये हैं ज्ञान रतन और बाकी जो शास्त्र हैं ना, वो हैं भित्तर–ठिक्कर–पत्थर, जिससे तुम पत्थर बुद्धि बने हैं। भक्तिमार्ग वाले बिगड़ेंगे। बोलेंगे– वाह! भक्ति...। अरे, ये तो ठीक है ना, तुम भक्ति करो

दुर्गति को पाओ। पूरे पाओ तो भगवान मिलेगा ना। सो तो मिला है ना। ये बताते हैं ना– तुम(ने) कितना समय भक्ति की है और दुर्गति में पाए हो। तभी तो भगवान आते हैं ना। ये तो समझते हो ना। भगवान आय हमारा मददगार बनो यानी भक्तों का रखवाला बनो। क्यों भक्तों का रखवाला बनो? भक्तों को क्या भीड़ आकर पड़ी है? भक्त तो दुःखी हैं। भक्ति से सुखी तो नहीं बने ना। पतित–पावन को बुलाते हो तो बरोबर आकर कहते हैं कि हमको ज्ञान–अमृत पिलाओ। इसको ज्ञान–अमृत...। अभी ज्ञान ये नॉलेज है, कोई अमृत–वमृत नहीं है। समझाने के लिए। ...कोई–2 गुस्सा करते हैं जिसको तो उनकी तो बात नहीं! तुम तो भगत हो। बस। (किसी ने कहा– नहीं बाबा, ज्ञान खूब सुनता है) जब तुम भगत हो तो क्या कहा? ....दुर्गति को पाए ..... यहाँ तुम बच्चों को, कोई भी जो मनुष्य करते हैं, सो तुम ब्राह्मणों को नहीं करना है। गीत–कविताएँ वगैरह–2 ये भी वास्तव में है कायदे के विरुद्ध और बच्चियाँ कहती हैं अगर ये कुछ इनको रमत–गमत का रूप नहीं दिखलाते हैं, तो ठहरते नहीं, भाग जाते हैं। अच्छा, गीत गाओ भई। .. मेहनत करनी पड़ती है ना। (किसी ने गाया– हमें छोड़कर बाबा मधुबन में जाओ रे। मधुबन में जावोगे, बम्बई की याद पावोगे.....) अभी बहुत हो गई बच्ची। (पुनः गीत गाया) सुनो ना बच्ची, बात तो सुनो ना। बम्बई में भी जावेंगे, कहाँ भी जाएंगे, तुमको धन तो देंगे ना ; क्योंकि और भी तो गोप–गोपियाँ हैं ना, क्या बॉम्बे की थोड़े ही हैं। अभी देर होती है, बच्चे खड़े हैं। (पुनः गीत गाया– क्या कारण है आपका जल्दी जाने का, करो लाख बहाने हमें तुम मनाने का.....) अरे, बहुत हुआ। बच्ची, मैं कहाँ जाता ही नहीं हूँ, तुम क्यों कहते हो कि जाते हैं। जहाँ भी जावेंगे तुमको वर्सा तो देंगे ना। कहाँ भी जाएँगे, तुम्हारी झोली भरकर जाएँगे और अभी तुम जानते हो कि वहाँ भी बहुत आएँगे ना...। अभी पहले तो बाबा के अनन्य सर्विसेबुल बच्चे तो बनो। अभी तो जिस्मानी भी करो और रूहानी भी अच्छी तरह से करो। कन्याओं को ये नहीं है कि गृहस्थ–व्यवहार में रहकर कमल फूल के समान पवित्र। ये किसको कहा जाता है? गृहस्थियों को, जिन्होंने शादी की है। ये तो फ्री है ना। इनको क्यों फँसना है? ये जो कन्हैया–2 कहते हैं, कन्हैया की याद क्यों होती है जास्ती ? क्योंकि कन्याएँ कोई फँसी हुई नहीं हैं। गृहस्थ–व्यवहार में नहीं हैं। उनको तो झट से एकदम बाप की सर्विस में लग जाना चाहिए। इनको कोई ... नहीं करना है। वो नौकरी करती है, देखो! कन्याओं को कोई नौकरी थोड़े ही आगे करने की। कन्या कभी आगे नौकरी नहीं करती थी। ये तो आजकल का फैशन हो गया है। .... कन्याओं के लिए गाया ही नहीं जाता है गृहस्थ–व्यवहार में कमल फूल के समान, कोई है? नहीं। कन्याओं के लिए तो फट से ये नॉलेज ले करके और ये नॉलेज देनी चाहिए; इसलिए इनको कन्याएं कहा जाता है, गऊमाता। गऊमाता तो वो गैंया आ गई। इनसे सिद्ध होता है कि वो गऊशाला नहीं थी। नहीं, मनुष्यों की शाला थी, कन्याओं की शाला थी। अभी हैं भी सभी कन्याएँ, कुमार और कुमारियाँ। कन्याओं का प्रभाव है ना। कन्या वो जो भारत का 21 जन्म का कल्याण करे। तो तुम सभी हो ना। कुमार और कुमारियाँ हो, भाई–बहन हो। बाबा ऐसा थोड़े ही कहते हैं कि आपस में भाई–बहन बनो। नहीं, ये तो ज्ञानमार्ग है। ये तो समझा जाता है कि हम प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हैं तो भाई–बहन हुए। हुए ज़रूर थे कब, जो बाप से वर्सा लिया था। तो फिर वही समय आया हुआ है। थे ज़रूर शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा। वो भी बाबा, वो भी बाबा। अच्छा, वर्सा कैसे मिले शिवबाबा से? ज़रूर साकार में आए ना। प्रजापिता ब्रह्मा साकार में। तो साकार में आ करके और फिर ये वर्सा पाते हैं। किससे? शिवबाबा से। तो तुम ब्रह्माकुमार–कुमारी....पवित्र रहो ; पर बहन–भाई ये तो ज्ञान हो गया कि हम ब्रह्माकुमारी, ये कुमार। तो ज़रूर हम तो बहन–भाई हैं; परन्तु फिर दोनों को/सबको डायरेक्शन्स हैं कि पवित्र रहो। जो पवित्र रहेगा ये जन्म और बाकी जो इतने जन्म पतित बने हो उनके पाप कहाँ जाए? वो फिर योग में रह करके; क्योंकि सभी सन्यासी कोई सन्यासी नहीं हैं। इनमें बहुत ही देवता धर्म वाले भी जा करके कनवर्ट हो करके सन्यासियों में बने हैं। उनको भी आना है। तो तुम बच्चे देखेंगे कि सन्यासी भी आएँगे। ... पिछाड़ी में बड़े–2 नाम बताते हैं ना– भीष्मपितामह। ...क्या हुआ? इनको भी तो नॉलेज मिली ना। तो वो भी कनवर्ट हो गए थे। जो कनवर्ट हो गए थे उनको नॉलेज मिली और इस धर्म में आ

गए। आगे चल करके नॉलेज तो मिलनी है ना; क्योंकि सब कनवर्ट हो गए, मुसलमान बन गए, कोई पारसी, कोई ये। तो वो सब आएँगे। जो मीठे सैपलिंग पत्ते हैं वो सब आएँगे। समझा, अभी टाइम है। टाइम क्यों जास्ती बाबा ? जल्दी नहीं करते हो बच्चे। जल्दी कैसे करें? तुम अभी योग लगाकर विकर्म विनाश करो ना। गोल्डन एज में तो आ जाओ। आयरन एज से हे बच्चे आत्माओं! तुम जो.. गोल्डन एज में थे, अभी आयरन एज में आ गए हो, अभी तुम आत्माओं को गोल्डज एज में यहीं बनना है। यहाँ पवित्र होंगे तब ले जाऊँगा। अगर तुम पुरुषार्थ करके न बनेंगे तो सज़ाएँ खाएँगे सब, दुःखी हो करके मरेंगे। तुम तो बहुत सुख में, तुम तो ऐसे ही बैठे–2, अरे नाटक पूरा हुआ, चलो छोड़ो इस पुराने तन को, हम चले अपने घर। तुमको इतना नशा आएगा पिछाड़ी में। पीछे वहाँ और दूसरा नशा। ये तो जाएँगे घर, फिर वहाँ सतयुग में– हम अभी बुड्ढे बने हैं। चलो साक्षात्कार हुआ, अभी हमको दूसरा छोटा शरीर लेना है। सब तमोप्रधान शरीर छोड़ना है, सतोप्रधान लेना है। अच्छा चलो, हम छोड़ देते हैं शरीर को। मिसाल है ना। जैसे सर्प एक खल छोड़ दूसरी लेते हैं। तो खल छोड़ करके दूसरी तो यहाँ आकर लेते रहेंगे ना पुनर्जन्म लेते–2। अभी ये पुरानी खल को छोड़ करके घर जाना है। वहाँ पुरानी खल छोड़ करके नई खल आपे ही लेते रहेंगे खुशी से और यहाँ ये पुरानी खल छोड़ कर सबको घर जाना है। समझा! बहुत अच्छा...। अच्छा, सभी सेन्टर्स के, कौन–से सेन्टर्स ? सभी रूहानी सेन्टर्स; क्योंकि ये रूहानी सेन्टर्स वाले ही जानते हैं रूहानी बाप हमको पढ़ाते हैं। तो सभी रूहानी सेन्टर्स प्रति आज बाबा बॉम्बे छोड़ रहे हैं और मधुबन जाएँगे। इसलिए आज बॉम्बे से सभी सेन्टर्स के सर्विसेबुल मीठे बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। सुनते तो सभी हैं। रोज़–2 मुरली तुम भी सुनते हो– जो पिया के साथ है उनके सन्मुख बरसात है। वो तुम्हारे पास फिर टेप द्वारा या ये मुरलियों द्वारा आ करके पहुँच जाती है। मुरलियाँ जल्दी पहुँचती हैं, टेप पीछे पहुँचते हैं। तो तुम जाँच कर सकते हो कि टेप से जो बाबा मुरली सुनाते हैं वो एक्युरेट सुनेंगे और जो मुरलियाँ द्वारा सुनते हैं उनमें कुछ न कुछ कट–वट जाती है। बाबा यहाँ जो सन्मुख समझाते हैं तो बाबा के एक्सप्रेशन्स को भी देख सकती हैं। बाबा भी सबके मुख को देखते–2 समझते हैं कौन समझता है, कौन नहीं समझता है, कौन बैठकर ....। बाबा समझते हैं इनका बुद्धियोग कहाँ बाहर है। कोई देखेंगे, आते हैं यहाँ कोई, तो बस बैठेंगे, शांत में बैठेंगे, यहाँ देखेंगे, वहाँ देखेंगे... ऐसे–2 करते रहेंगे यानी उनका मिजाज ठीक नहीं है। कभी देखते हैं कि वाह! ये तो झूलता है। नॉलेज सुनता, बहुत झूलता है एकदम। तो बाबा समझते हैं– वाह! इनको तो बहुत अच्छा लगता है। कोई–2 फिर कभी होते हैं, ऐसे भी करते हैं। (किसी भाई ने कहा– बाबा, वो भी झूलना है ना) नहीं, वो झूलना नहीं है। (किसी ने कहा– ..झुटका करते है) (किसी ने कहा– ये टेप कैसे भेजेंगे?) अच्छा, सुनो, बाबा ये सभी एक्सप्रेशन्स .. देखते हैं। बाबा के सन्मुख बैठते हैं, हर तरह की बातें करते हैं। अभी ये तो सन्मुख नहीं है। सो ये गाया हुआ है– जो पिया के साथ है, उनके लिए सन्मुख बरसात है। फिर कब तक एक के पास रह सकेंगे! सबके पास जाना है। तो ये कहते हैं ना– बाबा, बॉम्बे नहीं छोड़ो। अच्छा, बॉम्बे नहीं छोड़ो तो हमको जाना पड़े दूसरी जगह में भी। वहाँ तो सब सन्मुख आते हैं। अच्छा, और कुछ समझाना है? ...बाबा ने आगे कहा था जो सेन्टर वाले मैगज़िन्स जास्ती मँगाएँगे उनको इनाम मिलेगा। गवर्मेन्ट से जैसे मैडल्स मिलते हैं। इनाम तो तुम बच्चों को वैकुण्ठ की बादशाही मिलती है। जो चीज़ यादगार के लिए देते हैं कुछ भी, शिवबाबा याद पड़ा, तुम्हारा विकर्म विनाश हुआ। तो इसके लिए कहा जाता है– यादगार, मुझे याद करते रहना। देता है शिवबाबा। देता कुछ भी है, ये समझो कि ये साड़ी शिवबाबा ने पहनाई। तो याद आया ना। अगर कोई दूसरे ने दी होगी, लौकिक संबंधियों ने, तो ये किसने दी? फलाने ने दी। वो नुकसान हो गया। समझा ना ; क्योंकि याद ज़रूर पड़ेगी जहाँ से जो चीज़ ...। इसलिए बच्चों को भी कहा जाता है, जो सर्विस पर हैं, वहाँ रहते हैं, कहा जाता है– देखो, बाहर से कोई भी चीज़ लेकर पहनो नहीं, नहीं तो उनकी याद ज़रूर तुम्हारे पास आएगी, घाटा ज़रूर होगा थोड़ा। घड़ी–2 अब शिवबाबा की होगी तो याद पड़ेगी ये शिवबाबा की पहनाई हुई है यानी हैं हम शिवबाबा के। अगर दूसरी चीज़ होगी ना तो ये समझेंगे– ये फलाने ने दिया, भाई ने

दिया, ये चाची ने दिया, ये मामी ने दिया। वो याद ज़रूर आएँगे। जितना हो सके, जो अनन्य बच्चे हैं, जो सर्विस पर हैं वास्तव में, उनको हमेशा कपड़े यहाँ से, जितना हो सके यहाँ लेवें तो अच्छा है। बाहर से अगर मिले भी तो वो भेज देवें.. तो बाबा फिर उनको बदला करके दूसरा दे देगा। भई, ये शिवबाबा के। शिवबाबा की याद की बड़ी ज़रूरत है। याद से ही ये जो इतने विकर्म हैं ना...। ये पतित–पावन, वो तो देखते हो ना– हम पावन कैसे हुए। वो लोग थोड़े ही समझते हैं। गंगा में स्नान करने से पावन बनेंगे ; पर क्या बनेंगे? कोई किसकी बुद्धि में है? अच्छा भई, जाओ आज स्नान करो, पतित से पावन बनो। क्या बनेगा? ये तो फिर भी तो ऐसे ही मनुष्य ...। तुम जानते हो कि पावन बनने से हम स्वर्ग में जाते हैं। स्वर्ग की बादशाही लेते हैं नई दुनिया में। ये भस्म हो जाएगी। ये जान गए– ये मृत्युलोक है। इस लोक से जाना ही है। गंगा स्नान करने से लोक से नहीं जा सकते हैं। नहीं, ये तो बाप आए हुए हैं, कहते हैं शृंगार करके सबको नैनों पर बैठाय...। अभी नैनों पर नहीं बिठाते हैं। तुम जानते हो कि मच्छर के मिसल जाते हैं और बरोबर ये दुनिया पिसती ऐसे है जैसे घाणे में... पिसती है। उसके लिए भी शास्त्रों में है कि ये मरेंगे सभी ऐसे जैसे घाणे में पीसते हैं। अभी घाणे में नहीं पीसेंगे। ये तो अर्थक्वेक्स हैं। नैचुरल कैलेमिटीज़ हैं। सभी हुआ था ना। महाभारी महाभारत की लड़ाई हुई थी और सतयुग की स्थापना हुई थी। ब्रह्मा द्वारा देवी–देवताओं की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। तो विनाश हुआ था ज़रूर, फिर होगा। अभी कहाँ खाने का भी नहीं है। बच्चे पैदा होते हैं, पता है कितने? एक–2 महीने में लाखों वृद्धि को पाते हैं और अभी जगह कहाँ! खाने का नहीं है। देखो, गवर्मेन्ट कहती है– बच्चे न पैदा करो। तो देखो, ये युक्ति रचते हैं– अभी विकार में नहीं जाओ तो बच्चा भी नहीं पैदा होगा। बच्चे पैदा भी कैसे होते हैं। बिच्छू–टिण्डन, नाग–बलाएँ पैदा होते हैं। एक/दो को डसते हैं, काटते हैं। अच्छा, और कुछ!... बॉम्बे वालों ने सबसे जास्ती सर्विस की है ; इसलिए वो मैगजीन भी जास्ती मँगाई है, जो बच्चे पढ़ते रहते हैं। इसलिए इनको बाबा ने कहा था....गवर्मेंट इनाम देंगी। अच्छा, इनाम तो गवर्मेन्ट देती है; परन्तु है ही फिर गवर्मेन्ट की चीज़। कोई भी कुछ घर में ले जा ही नहीं सकते हैं; (क्यों)कि है ही सब कुछ गवर्मेन्ट का। ये सारी दुनिया जो भी है वो है उस गवर्मेन्ट की। वो सबको हप कर लेते हैं एकदम। सब खतम हो जाएगा। अरे, जो भी धन–दौलत, ये मकान देखते हो ना, ये सभी गवर्मेन्ट ले लेगी। समझा ना। ये सब ले लेगी। फिर तुमको उसके बदली में गवर्मेन्ट नया सब कुछ देगी। एवरीथिंग न्यू। बाप आ करके तुम बच्चों को एवरीथिंग न्यू। तुम्हारी आत्मा न्यू, तुम्हारा शरीर न्यू, तुम्हारे मकान न्यू वा धरती न्यू। सब नई–2 और सब कुछ तुम्हारी। तुम्हारी बादशाही 21 जन्म कोई छीन नहीं सकता है। तुम सारे आसमान के मालिक, सारी सृष्टि के मालिक, सारे सागर के मालिक। सब एयर स्पेस सारी तुम्हारी। ये सागर की स्पेस सारी तुम्हारी। तुमको इतना देते हैं। सो भी हर 5000 वर्ष सब कुछ देते हैं। पार्टीशन होती ही नहीं है। कोई एक भी ईंट, जमीन या आसमान तुम्हारे से कोई ले नहीं सकते हैं 21 जन्मों के लिए। और भी 21 जन्म के लिए फिर भी ; परन्तु आपस में बिगड़ते हैं ना तो फिर टुकड़ा–2 हो जाता है। नहीं तो सबका मालिक अभी समझते हो तुम थे ना। । ये सबका मालिक थे ना, दूसरा कोई थोड़े ही था। तुम विश्व के मालिक थे। तो विश्व का मालिक बनना शिवबाबा से, योग और ज्ञान से। सो भी कितना! याद करो अलफ को और बे को याद करो। बस, तुम सारे विश्व का मालिक बनते हो एक सेकेण्ड में, अलफ और बे याद करने से। बस, दूसरा कुछ जास्ती है नहीं। तो सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का हिसाब हुआ ना। जैसे बाप का बच्चा पैदा हुआ, वारिस बन गया। ये बाप को जान लिया अच्छी तरह से, वारिस हो गया। स्वर्ग का वारिस हो गया; परन्तु पुरुषार्थ कर–करके या राजाई लो या प्रजा बनो या दास–दासियाँ बनो– ये फिर तुम्हारे पुरुषार्थ के ऊपर है। बाकी स्वर्ग में तो ज़रूर बनेंगे। पक्का–2 गारंटी। बाकी पुरुषार्थ जितना करेंगे उतना ऊँच पद मिलेगा और वही पद तुम्हारा कल्प–2 रहेगा। चाहे राजा–रानी बनो, चाहे पाई–पैसे की प्रजा बनो। फिर कल्प–2 ऐसे ही बनती रहेगी;

इसलिए पुरुषार्थ की प्रालब्ध पाओ। अच्छी पुरुषार्थ करो। मुरझाओ नहीं।... बाबा को याद करते रहेंगे– आह बाबा! स्वर्ग की बादशाही ... ओहो–हो–हो, 21 जन्म राजाई भोगा आहा–हा–हा। तुमको तो चलते–उठे–बिठे ऐसे होना चाहिए, सच। तब बाबा ने कहा पहले–2 जब बाबा ने साक्षात्कार (किया) ये विनाश होगा। ....आहा–हा–हा हम इतना हँसते थे, जो बोला ये चरिया हो गया...। अच्छा, और कुछ? हाँ, कलकत्ता को सेकण्ड नम्बर; क्योंकि उन्होंने जास्ती। देखो, नया है ये सेन्टर। उन्होंने बहुत मँगाई और थर्ड नंबर में घाटकोपर ... का सेन्टर। ...ये तो बाबा मैगजिन बहुतों को मिले और बहुत ही पढ़ें, इसके लिए किया था। बाकी सिवाय टीचर तुम पढ़ सकेंगे उनको। बाहर वाले इतना नहीं समझ सकेंगे। टीचर बिगर शास्त्र कौन पढ़ावे? गीता का टीचर तो ओरिजनल निराकार शिवबाबा ना और उन्होंने रख दिया बच्चे का नाम। भला ऐसी चरियाई कोई भी नहीं करे कि बाप की बायोग्राफी में नाम डाल देवे बच्चे का। ये सारा खेल बिगड़ गया ना। तो बाबा कहते हैं कितनी बड़े ते बड़ी भूल। भगवान सुनाये गीता और ...सुनाते उसको हैं जो पूरा पतित है और नाम रख दिया पूरे पतित का...गीता के ऊपर। ये देखो कितनी बड़ी बात! नुकसान हो गया। अभी समझते हो ना। बाप पतित–पावन। ये जो कृष्ण सो 84 जन्म भोग करके पिछाड़ी के जन्म में हैं और फिर बाप से वर्सा ले रहे हैं। तुम बाप से वर्सा ले रहे हो ना। ये भी बाप से वर्सा ले रहे हैं ना। तो अभी इसका नाम गीता के ऊपर कैसे चढ़ सकता है। नहीं, ये जब प्रिंस बन जाते हैं, फिर गीता होती ही नहीं है वहाँ। तो देखो, कोई भी नहीं समझते हैं ये अपना बनाते हैं। अच्छा, अपना बनाते हैं तो भले जो चाहो सो खाओ। एक दिन आएगा सबको ज़रूर। जाएँगे कहाँ! एक हट्टी है ना। बाप की हट्टी है। बाप से वर्सा देने(लेने) बिगर जाएँगे कहाँ! भारतवासियों के लिए बाबा कहते हैं। और बाकी तो सभी सज़ाएँ–वज़ाएँ खाकर मुक्तिधाम में चले जाएँगे। उनकी कोई बात ही नहीं है। ये है ही 84 जन्म की भारत की बात।... भारत सचखण्ड, भारत द हाईएस्ट, द रिचेस्ट, द प्युरेस्ट। इसको जो कहो, टाइटिल दो। सबसे बड़ा तीर्थ यात्रा भी भारत है। बस सिर्फ शिव के ऊपर ही फूल चढ़ाना चाहिए, और कोई के ऊपर भी नहीं; परन्तु ये तो देवताएँ हैं फूल। फूल तो उनके ऊपर चढ़ते ही हैं। चढ़ने की तो दरकार नहीं है। वो तो ये जेवर पहनते हैं, कोई फूल थोड़े ही पहनते हैं। वहाँ तो ये फूल रख दिया दिखलाने के लिए कि तुम बच्चे विष्णु माला के फूल बनते हो, तो फूल की माला है। नहीं तो फूल की क्या.....खुशबू ऐसी फर्स्टक्लास बगीचे में और वहाँ। पहनेंगे क्यों! वहाँ तो बहुत फर्स्टक्लास फूल होते हैं। इतनी फर्स्टक्लास खुशबू होती है, अगरबत्तियों की दरकार नहीं रहती है बिल्कुल। समझा ना। अच्छा, और कुछ! अभी छुट्टी दो। बाबा जाते नहीं हैं। बाबा तो बहुतों को याद कर...। .....बच्चे सब सुन रहे हैं। अच्छा, सभी सिकीलधे, देखो कभी कोई मनुष्य, सन्यासी–उदासी नहीं कहेंगे सिकीलधे। मीठे–2, सिकीलधे, फिर भी सिकीलधे कितने बरस के में गुम हो गए और फिर भी मिले। ये बच्चे किसको पैदा होते हैं ना, तो ढिंढोरा पिटाते हैं। तो बाप कहते हैं कि ड्रामा के अनुसार हमको मालूम है कि तुम फिर 5000 बरस के बाद मिलेंगे। तुमको ये मालूम पड़ा कि हम कितना जन्म कैसे लेंगे, फिर हम भक्तिमार्ग में कैसे जाते हैं। सब मालूम हो गया। तो तुम अभी मास्टर नॉलेजफुल बन गए। तो औरों को बनाना है। ऐसे मास्टर नॉलेजफुल नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।